फरीदाबाद

# मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

**230 बिस्तर वाले ई.एस.आई. अस्पताल में ऑपरेशन थियेटर के एयर कन्डीशनर 4 साल से खराब पड़े हैं। पसीने से तर मरीज का पसीना टपकते डॉक्टर-नर्स ऑपरेशन करते हैं।**

नई सीरीज नम्बर 156 जून 2001

# आन्तरिक वेदना के स्वर

**चौदह वर्षीय लड़की :** " हमें सच बोलना अच्छा लगता है। किसी के मुँह पर उसकी बड़ाई करना और पीठ पीछे उसकी बुराई करना हमें बहुत खराब लगता है। मम्मी- पापा जब कभी पार्क में ले जाते हैं तब वहाँ पेड़- पौधों से बात करने में मुझे खूब मजा आता है। पेड़ से सच्ची- सच्ची बात करो और वह बड़े आराम से सुनता है। लोगों के साथ सच बोलना बहुत मुश्किल है। बस्ती में मैं अकेली- सी पड़ जाती हूँ.... मिलना- जुलना और बातें तो बहुत होती हैं पर ऊपर- ऊपर वाली, मन की बातें- सच्ची बातें बहुत ही कम हो पाती हैं।

" अपनी कक्षा में हम 27 लड़कियाँ पढ़ती हैं। हम सात ने तय किया है कि सच बोलेंगी और बीस कहती हैं कि सच का जमाना नहीं है। हम सात सहेलियों में एक तो ऐसी है कि हर समय सच्ची बात बोल देती है और अन्य लड़कियाँ उसे पागल कहती हैं। हम बाकी सहेलियाँ झूठ नहीं बोलती पर सच बोलने में ज्यादा ही परेशानी नजर आती हैं तब चुप रहती हैं। ' चलो कम से कम सच तो बोला ' कह कर कभी कोई अध्यापिका मामले को वहीं खत्म कर देती है पर आमतौर पर सच बोलने पर हमें सजा मिलती है। इन दो साल में सच बोलने पर कितनी ही बार तो टीचर ने प्रिन्सिपल के यहाँ मेरी पेशी लगवाई है।"

तन का दर्द तो वर्तमान व्यवस्था में व्यापक है ही, मन की पीड़ा से तो आज शायद ही कोई बचा हो। मनुष्यों के बीच सीधे, सच्चे, सहज सम्बन्धों में आती बाधायें बढती जा रही हैं। अन्य के साथ झूठ और धोखाधड़ी अपने स्वयं के साथ झूठ- धोखा में प्रवेश कर रही हैं। विकास व प्रगति की गति आन्तरिक वेदना में तीव्र वृद्धि लिये है :

– आत्मा में जो रहम था वह खत्म हो रहा है। गुस्से की ज्यादा बढोतरी हो रही है। आदर नहीं करते, सम्मान नहीं करते, शरम नहीं करते, लिहाज नहीं करते .... लोग बेरहम हो रहे हैं।

– बाप बेटे को नहीं पहचान रहा, बेटी बाप को नहीं पहचान रही, भाई भाई को नहीं पहचान रहा। जैसे बकरा- मुर्गा खाते हैं वैसे ही आज इन्सान इन्सान को खा रहा है।

– मिट्टी से नहीं बल्कि अब पाउडर से शरीर को पालते हैं और मिट्टी से घृणा करते हैं।

– हर इन्सान जान रहा है कि गलत है लेकिन जान कर अनजान बन सही को मानने का ढोंग करता है।

– हर प्रकार के सम्बन्ध में, निकट से निकट रिश्तों में भी पैसों का महत्व बढ रहा है। पैसे, पद, बल में कमजोर के प्रति उपेक्षा व दया दिखाना सामान्य- सी बातें बनती जा रही हैं।

– किसी की बेबसी, लाचारी, कमजोरी, अनजानेपन का फायदा उठाना बहुत व्यापक हो गया है। अपनी वजह से दूसरे को होती परेशानी के प्रति बेरुखी और आत्म- केन्द्रित होने की प्रवृतियाँ तेजी से बढ रही हैं। अपने से उन्नीस के प्रति गलत व्यवहार ने सामाजिक मनोरोग का रूप धारण कर लिया है, परपीड़ाआनन्द बहुत व्यापक हो गया है।

– खासकरके अपने करीब वालों से दुःख होता है इसलिये कि वे विश्वास दिला कर जख्म दे देते हैं, धोखा दे देते हैं। यह अक्सर होता है।

– किसी के अगर नजदीक जाने की कोशिश करो तो पहले ही ऐसा व्यवहार कर देते हैं कि करीब पहुँचने से पहले ही दूर हो जाते हैं। इससे बहुत तकलीफ होती है। पता नहीं लोग ऐसा क्यों करते हैं।

– निकटजन प्रियजन नहीं रहे। घर में किसी को तकलीफ होती है तो उसे मजाक में उड़ा देते हैं, दर्द की- कराह की खिल्ली तक उड़ा देते हैं। पीढीयों के बीच रिश्तों में व्यापक टूट- फूट हो रही है। बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों के बीच सम्बन्ध बिखराव के कगार पर हैं।

– हर इन्सान के अन्दर होता है कि जितना हो सके अन्य लोगों का सहयोग करे। लेकिन हालात इतनी खराब हैं कि आदमी जल्दी किसी का सहयोग ही नहीं करता क्योंकि यह सोचा जाता है कि स्वार्थवश कर रहा है। कैसे किसी की सहायता करें जब आगे वाला पहले ही शक कर लेता है।

– झूठ बोलना, हाँ कह कर नहीं करना, चार लोग मिलकर कर रहे हों तब बहाने बनाना .... समाज का ढाँचा इतना बिगड़ गया है कि मन के मुताबिक चलें तो दस दिन भी नहीं चल पायें।

– नौकरी में आत्मा तिलमिलाती रहती है।

– पता नहीं क्या बात है कि सामान्य बातचीत में भी जैसे अपनी- अपनी बात ऊपर रखने की होड़ लगी हो।

– किसी भी कारण किसी के सामने झुकने में दिल को चोट लगती है और माहौल ऐसा है कि कदम- कदम पर झुकना पड़ता है।

मन को होती पीड़ा- दिल को होते दर्द- आत्मा को लगती ठेस- विवेक को लगती चोट पर हुई छुटपुट बातचीत में से चन्द बातें उपरोक्त हैं। वर्तमान व्यवस्था में आन्तरिक व्यथा की यह एक झलक मात्र है।

***तन व मन की पीड़ा को अभिव्यक्ति देना, इन्हें चर्चा में लाना दर्द के निदान के लिये जरूरी हैं। लेकिन वेदना के बयान अक्सर विलाप बन रहे हैं। और, व्यवस्था को दोष देना अक्सर अपने दुष्कर्म के लिये दलील बन रहा है। विलाप व दुष्कर्म बेशक राहत देते हैं पर मात्र क्षणिक राहत और वह भी ऐसी राहत जो समय के साथ पीड़ा को बढाती है।***

वेदना के बयान विलाप न बन जायें, अपने दुष्कर्म के लिये दलील न बन जायें इसके लिये वर्तमान व्यवस्था में दरारें डालने, दरारें बढाने में और नई समाज रचना के मन्थन में साँझीदार बनना एक अनिवार्य आवश्यकता है। (जारी) ■

## मन्थन

**प्लासर इंडिया मजदूर :** " तीन साल पहले फैक्ट्री के 45 परमानेन्ट मजदूर तथा ठेकेदारों के जरिये रखे कुछ वरकर एक एन्टी- करप्शन ग्रुप के सदस्य बने और मैनेजमेन्ट के भ्रष्टाचार की शिकायतें कई सरकारी विभागों को की। श्रम विभाग, भविष्य निधि वालों और चण्डीगढ से आले अधिकारियों ने पुलिस के संग कई बार फैक्ट्री पर छापे मारे। सौदे पटे और फिर मैनेजमेन्ट ने 5- 5, 10- 10 करके दस- बारह साल से

(बाकी पेज दो पर)

# कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

**कानून हैं** – ●साप्ताहिक छुट्टी के बाद हरियाणा में हैल्पर को इस समय महीने की कम से कम तनखा 1964 रुपये 58 पैसे , अर्ध- कुशल (क) को 2014 रुपये 58 पैसे , अर्ध- कुशल (ख) को 2039 रुपये 58 पैसे , उच्च कुशल मजदूर को 2164 रुपये 58 पैसे कम से कम ; ●जहाँ एक हजार से कम मजदूर हैं वहाँ वेतन 7 तारीख से पहले और जिस कम्पनी में हजार से ज्यादा हैं वहाँ 10 तारीख से पहले ; ●स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर , आठ महीने लगातार काम करने पर परमानेन्ट ; ●ओवर टाइम समेत एक हफ्ते में 60 घण्टों से ज्यादा काम नहीं लेना ,तीन महीनों में 75 घण्टों से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं , ओवर टाइम के लिये पेमेन्ट डबल रेट से ; ●फैक्ट्री शुरू होने के पहले दिन से प्रोविडेन्ट फण्ड , मजदूर के वेतन (बेसिक व डी.ए.) से 10 प्रतिशत काटना और 10 प्रतिशत कम्पनी ने देना , हर महीने 15 तारीख से पहले यह 20 प्रतिशत राशि मजदूर के भविष्य निधि खाते में जमा करना ; ●फैक्ट्री में एक घण्टे की ड्युटी पर भी ई.एस.आई. ; ●कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को भी 20 दिन पर एक दिन की अर्न्ड छुट्टी तथा त्यौहारी छुट्टियाँ; ●परमानेन्ट- कैजुअल- ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को एक जैसे काम के लिये समान , बराबर वेतन ;● ....

**पी.के. कास्टिंग मजदूर** : " 24 सैक्टर स्थित फैक्ट्री में हमें मार्च और अप्रेल की तनखायें आज 12 मई तक नहीं दी हैं। कम्पनी हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड जमा नहीं कर रही।"

**एलपिया पैरामाउन्ट वरकर** : " ठेकेदार के जरिये रखे को 1200- 1300 और कैजुअल वरकर को 1400- 1500 रुपये महीना देते हैं। ई. एस.आई. कार्ड नहीं , पी.एफ. की पर्ची नहीं।"

**ओरियन्टल मजदूर** : " 16/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में रोज 12 घण्टे तो काम करवाते ही हैं , रविवार को छुट्टी होती है इसलिये शनिवार को 20 घण्टे काम करवाते हैं। आठ घण्टे प्रतिदिन पर महीने के 1550 रुपये रखे हैं और ओवर टाइम पेमेन्ट सिंगल रेट से – इतना काम करने पर हमें 2400 रुपये महीना देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची नहीं। नये- नये लड़कों को भर्ती करते हैं और निचोड़ कर निकाल देते हैं।"

**सेक्युरिटी गार्ड** : " तीसों दिन और हर रोज 12 घण्टे की ड्युटी के बदले **सुपर कॉप्स सेक्युरिटी** हमें 1600 रुपये वेतन देती है। न ई. एस.आई. कार्ड और न पी.एफ. की पर्ची। सुपर कॉप्स के दफ्तर पर कोई बोर्ड नहीं होता और दफ्तर बदलते रहते हैं।"

**मनचूर इन्डस्ट्रीज वरकर** : " अप्रेल का वेतन आज 12 मई तक नहीं दिया है। वर्दी , जूते और साबुन भी कम्पनी ने रोक रखे हैं।"

**सुड ट्रैक मजदूर** : " 16/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम 1200 मजदूर काम करते हैं, सब टेम्परेरी हैं। तनखा 1300- 1400 रुपये महीना देते हैं।"

**प्रेस कास्ट वरकर** : " 24 सैक्टर स्थित फैक्ट्री में 90 मजदूरों में से 12 ही परमानेन्ट हैं। कैजुअलों को 1200- 1400 रुपये महीना देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं , पी.एफ. की पर्ची नहीं।"

**आटोपिन मजदूर** : " इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में मार्च का वेतन 30 अप्रेल को देना शुरू किया था और 8 मई को जा कर निपटाया था। अप्रेल की तनखा का आज 19 मई तक नामोनिशान ही नजर नहीं आता।"

**मलिक इन्टरप्राइजेज वरकर** : " 16/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम 45 मजदूर काम करते हैं। ड्युटी 12 घण्टे की है और 1800 रुपये महीना देते हैं। जब चाहे निकाल देते हैं और ज्यादातर नये लड़कों को ही लेते हैं। कुछ का ई. एस.आई. व पी.एफ. है और कुछ का नहीं।"

**सिफ्टर इन्टरनेशनल मजदूर** : " 83 सैक्टर– 6 स्थित फैक्ट्री में हमें फरवरी , मार्च और अप्रेल की तनखायें आज 19 मई तक नहीं दी हैं। कम्पनी कहती है कि पीछे से पैसे नहीं मिल रहे , चेक बाउन्स हो रहे हैं।"

**सुपर सील वरकर** : " सुपर ऑयल सील की राह पर ही सुपर सील है। मार्च और अप्रेल की तनखायें हमें आज 12 मई तक नहीं दी हैं।"

**कनवर्टेड इंजिनियर मजदूर** : " संजय मेमोरियल स्थित फैक्ट्री में अप्रेल का वेतन हमें आज 19 मई तक नहीं दिया है। हम पैसे माँगते हैं तो कहते हैं कि नहीं हैं , जो चाहो कर लो। जिनको निकाल दिया है उनको हिसाब नहीं दिया है और कहते हैं कि कोर्ट जाओ।"

**अमेटीप मशीन टूल्स वरकर** : " करोड़ों रुपये का स्क्रैप बेचा है पर अप्रेल की तनखा हमें आज 15 मई तक नहीं दी है।"

**नूकेम मजदूर** : " कम्पनी को ज्यादा उत्पादन की जरूरत थी इसलिये फरवरी , मार्च और अप्रेल में नूकेम मशीन टूल्स मैनेजमेन्ट ने हर रोज हम से जबरन 12 घण्टे ड्युटी करवाई। लेकिन फरवरी , मार्च और अप्रेल की तनखायें कम्पनी ने आज 19 मई तक हमें नहीं दी हैं।"

**मोहित ब्राइट स्टील वरकर** : " 25 सैक्टर– 24 स्थित फैक्ट्री में कैजुअलों को 1400 रुपये महीना देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं , पी. एफ. की पर्ची नहीं। पन्द्रह दिन में एक किलो साबुन देते थे पर एक साल से नहीं दे रहे और साबुन माँगने पर गालियाँ मिलती हैं।"

**फर आटो मजदूर** : " आज 15 मई हो गई है और अभी परमानेन्टों को अप्रेल का वेतन नहीं दिया है। कैजुअलों और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को तो अभी मार्च की तनखा भी नहीं दी है।"

**इन्जेक्टो वरकर** : " अप्रेल का वेतन आज 18 मई तक नहीं दिया है। पता नहीं कब देंगे। तनखा की ही गारन्टी नहीं है ऐसे में उम्मीद के लिये जगह ही कहाँ है। नेता लोगों ने डी.सी. , डी. एल. सी. को और चण्डीगढ भी शिकायतें की हैं पर कहीं कोई सुनवाई नहीं है।"

**आई.सी. पेन्टवेयर मजदूर** : " कम्पनी बडकल मोड़ पर है। अप्रेल की तनखा हमें आज 15 मई तक नहीं दी है।" ■

## मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं ; हजारों नट- बोल्ट होते हैं ; नालियाँ- सीवर होते हैं ; कई- कई ऑपरेशन होते हैं ; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं : ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें ; ✱ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो ; ✱ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें ; ✱ बिजली कभी कड़के , कभी दमके , कभी आँख- मिचौनी करने मक्का-मदीना चली जाये ; ✱ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के , शान्त मन से , ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

## मन्थन .....(पेज एक का शेष)

लगातार काम कर रहे ठेकेदारों के जरिये रखे सब वरकरों (60- 70) को नौकरी से निकाल दिया। अब मैनेजमेन्ट तीन महीने के लिये कैजुअल रखती है और बदल देती है। जो 45 परमानेन्ट मजदूर भ्रष्टाचार- विरोधी संगठन के सदस्य बने थे उन्हें छोटी- छोटी बातों पर वार्निंग- चार्जशीट दी और विभाग बदले। मैनेजमेन्ट ने एक वर्क्स कमेटी बनाई है और उसके साथ एग्रीमेन्ट करती है तथा हर मजदूर से वर्क्स कमेटी कागजों पर हस्ताक्षर करवाती है। सरकार पर भरोसा कर भ्रष्टाचार- विरोधी संगठन के सदस्य बने मजदूर परेशान ही हुये हैं और नुकसान ही उठाया है।" ■

# भूलभुलैया काम-दाम की

**एस.पी.एल. मजदूर** : " 25 सैक्टर स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों से भी रात 9- 10 बजे तक काम करवाया जाता है। कम्पनी हर समय काम- काम करती रहती है। कहने को हम पीस रेट पर हैं पर हमारे सिर पर खड़े रहते हैं और ड्युटी भी हम अपनी मर्जी से नहीं कर सकते।"

**हिन्दुस्तान वायर वरकर** : " हर दो महीने कोई न कोई स्कीम ला कर मैनेजमेन्ट नौकरी से निकालने की जुगत भिड़ाती है। डेढ सौ मजदूरों को इस प्रकार निकालने के बाद मैनेजमेन्ट ने क्लेश और बढा दिया है। कहाँ तक बचा जाये ?"

**ए.टी. इंजिनियरिंग मजदूर** : " डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हम 40 वरकर हितकारी पोट्रीज के लिये एलिमेन्ट बनाते थे। हितकारी के बन्द होने पर हम में से 30 को नौकरी से निकाल दिया। बचे हुये हम दस को अप्रेल की तनखा आज 16 मई तक नहीं दी है।"

**सी.एम.आई. वरकर** : " सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये 150 मजदूर रखे हैं। हम से प्रोविडेन्ट फण्ड के फार्म नहीं भरवाते पर फण्ड के पैसे हमारी तनखा में से काटते हैं और जब निकाल देते हैं तब फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भर कर देते। इसी प्रकार हमारी तनखा में से ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं पर हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। इन कटौतियों के अलावा भी 200- 300 रुपये काट लेते हैं और तनखा के नाम पर हमारे हाथ में 1400- 1500 रुपये महीना ही आते हैं। लगातार काम करते हमें 16 घण्टे तो हो ही जाते हैं, लगातार 24 घण्टे भी काम करवा लेते हैं पर ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से करते हैं।"

**कर्मा इंजिनियरिंग मजदूर** : " प्लॉट 5 सैक्टर-5 में ओवर टाइम और बिना तनखा बैठा देने का घालमेल चलता है। अप्रेल में हमें एक बार 6 दिन और एक बार 5 दिन बैठा दिया। अप्रेल में ही 4 दिन का ओवर टाइम करवाया। तनखा में से 11 दिन के पैसे काट लिये और ओवर टाइम की पेमेन्ट की नहीं। मशीन ऑपरेटरों को भी हैल्पर कहते हैं और ई.एस.आई. कार्ड दिये नहीं हैं।"

**साधु उद्योग वरकर** : " सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हमें अपने शिकंजे में रखने के लिये मैनेजमेन्ट ने कमेटी बनाई है और कहती हैं कि कमेटी के जरिये समस्यायें उठाओ। हेरा- फेरी इस कदर है कि दस्तखत 3200 पर करो और लो 2200 रुपये।"

**सोनिया टैक्सटाइल्स मजदूर** : " प्लॉट 32 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में हम 225 परमानेन्ट वरकर थे, अब 100 ही बचे हैं और अब भी हमें इस कदर परेशान किया जा रहा है कि नौकरी छोड़ जायें। कहने को कम्पनी ने 150 वरकर ठेकेदार के जरिये रखे हैं पर ठेकेदार कोई है ही नहीं - पहले एक था वह लड़- झगड़ कर चला गया। दरअसल पहले भी हाजरी लगाने, काम करवाने और तनखा देने के कार्य कम्पनी ही करती थी और अब भी कम्पनी ही करती है। इन 150 वरकरों को कम्पनी 1400- 1500 रुपये महीना तनखा देती है - ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची नहीं।"

## और बातें यह भी

**बाटा फैक्ट्री मजदूर** : " हमारे यहाँ मैनेजमेन्ट से मान्यता- प्राप्त यूनियन है। दस- बारह साल से यूनियन के प्रस्ताव पर मैनेजमेन्ट हमारे वेतन में से पैसे काट कर यूनियन को दे रही है। लेकिन किसी डिसमिस अथवा सस्पेन्ड वरकर के लिये पैसे एकत्र करने के वास्ते वाले यूनियन प्रस्ताव पर मैनेजमेन्ट हमारे वेतन में से पैसे काटने से इनकार कर देती है।

" अपनी शर्तें थोपने के लिये बाटा मैनेजमेन्ट ने 1999 में फैक्ट्री में तालाबन्दी की। आठ महीने हमारे पेट पर लातें मारने के बाद सन्तुष्ट हो कर मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी समाप्त की। फैक्ट्री फिर से चालू करने के समयं अक्टूबर 99 में कम्पनी ने हर मजदूर को 7 हजार रुपये कर्ज दिया। इन 7 हजार में से 100 रुपये काट कर मैनेजमेन्ट ने यूनियन को दिये। मैनेजमेन्ट द्वारा एकत्र कर दिये एक लाख रुपये से यूनियन ने मजबूती के साथ मैनेजमेन्ट के खिलाफ अदालती लड़ाई लड़ने की घोषणा की। केस द्वारा आठ महीने की तालाबन्दी के दौरान का वेतन देने को मैनेजमेन्ट को मजबूर करने का ऐलान था। समय बीतता गया और 8 महीने की तनखा की बात आई- गई सी हो रही थी कि मई के आरम्भ में यूनियन के प्रस्ताव पर मैनेजमेन्ट ने हर वरकर के वेतन में से 125 रुपये काट लिये। इन 125 में से 24 रुपये यूनियन के वार्षिक चन्दे के वास्ते थे और 101 रुपये तालाबन्दी के वेतन को मंजिल तक पहुँचाने के लिये थे। यह 101 रुपये प्रति वरकर लिये दस दिन मुश्किल से बीते थे कि खुसर- पुसर से पूरी फैक्ट्री में बात फैलाई गई कि तालाबन्दी के 6 महीने वेतन वाला केस यूनियन हार गई है। तालाबन्दी के 2 महीने वेतन वाला केस अभी चल रहा है। हाई कोर्ट की बातें हैं और फिर सुप्रीम कोर्ट है।"

**भारत मशीन टूल्स वरकर** : " जनवरी से देय महँगाई भत्ता मैनेजमेन्ट ने नहीं दिया है और कहती है कि डी.ए. नहीं देगी।"

**एस्कोर्ट्स मजदूर** : " पूरे एग्री मशीनरी ग्रुप में मैनेजमेन्ट द्वारा वी.आर.एस. का सुदर्शनचक्र फिर चलाने की चर्चा प्लान्टों में है।" ■

रवतों से

# सतयुग की वापसी

सभी सन्त- महात्मा व धर्मशास्त्र हमें बताते हैं कि मानव का जन्म तो सहज होता है परन्तु मानवता बड़े प्रयत्न करने से प्राप्त होती है। ..... प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह पृथ्वी पर भार स्वरूप हो कर न रहे वरन् सच्चा इन्सान बने। परस्पर सद्भावना, सद्व्यवहार, स्नेह- सौजन्य, सहानुभूति, सहृदयता, आत्मीयता, करुणा, उदारता, सेवा, सहायता, परमार्थ- परायणता आदि मानवीय गुण हैं जिनको जितना विकसित किया जायेगा उतनी ही अधिक मानवता विकसित होती जायेगी और मानव जीवन सफल, श्रेष्ठ व सार्थक बनता चला जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रयास करना चाहिये कि उसका जीवन सफल, श्रेष्ठ और सार्थक बने। .... माँसाहार, शराब, व्यभिचार, दुराचार, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, हिंसा, बलात्कार, दूसरों को सताना, अंधविश्वास, छल, कपट, ढोंग, आडम्बर, खाद्य- पदार्थों में मिलावट आदि दुष्प्रवृतियों को अपनाने वाला व्यक्ति मानवता के स्तर से नीचे गिर कर नर पशु बन जाता है और दुःख पाता है। .... श्रेष्ठ गुण, कर्म और स्वभाव वाला व्यक्ति ही अच्छा इन्सान कहा जाता है।

– मुरारी लाल, अलवर

**....गाँव की** मौजूदा स्थिति पहले से अधिक तनावपूर्ण है। लोगों में बौखलाहट एक सामान्य बात सी लगने लगी है। हर व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से समाधान चाहता है। जो बात पीड़ादायक है वही लोगों की नीयत में दिखती है। उदाहरण के लिये : सरकार से सब परेशान हैं लेकिन नेता ज्यादा लोग बनना चाहते हैं, पैसा सारी समस्याओं की जड़ है लेकिन अधिक लोग पैसे के लिये दूसरों का गला काट रहे हैं। दूसरी बात यह भी है कि हर व्यक्ति, वो चाहे साक्षर हो या निरक्षर, अपनी पीड़ा बखूबी समझता है और अपने तरीके से हर व्यक्ति अपनी समाधान भी ढूँढता है लेकिन इसके बावजूद इन्सान की वर्तमान हालत कितनी बदतर है .... आज की तारीख में दाल- रोटी के लिये लोग जिस कदर परेशान हैं इससे भी बदतर स्थिति होगी ये अपनी समझ से परे है .....

– अजय, सुलतानपुर

**कहत कबीर**

**रुपये-पैसे की आवश्यकता जितनी ज्यादा घटायेंगे.... ....उतनी ही अपने लिये जगह बढायेंगे।**

# सन्तम् शरणम्

**ई.एस.आई. कारपोरेशन कर्मचारी :** " हमारे विभाग में यह आम जानकारी की बात है कि फरीदाबाद में चार लाख मजदूर ऐसे हैं जिनको ई.एस.आई. के तहत होना चाहिये। लेकिन फरीदाबाद में एक लाख पैंसठ हजार मजदूरों के नाम ही ई.एस.आई. कारपोरेशन में दर्ज हैं। और , जो ई.एस.आई. कार्ड विभाग बनाता है उन्हें विभाग स्वयं मजदूरों को नहीं देता बल्कि कम्पनियों को सौंप देता है। शिकायतों को देखते हुये मोटा-मोटा अन्दाजा यह भी है कि कम्पनियाँ इन 1,65,000 ई.एस.आई. कार्डों में से भी 50,000 कार्ड तो मजदूरों को देती ही नहीं। जाँच करने और ई.एस.आई. द्वारा खुद मजदूरों को कार्ड देने की बातें उठती हैं तब हमारे साहब कहते हैं , ' सभी कम्पनियाँ हमारे लिये सन्त हैं..... । ' "

# परोपकार शरणम्

**एस्कोर्ट्स मेडिकल वरकर :** " सब मजदूर जानते हैं कि यहाँ इलाज बहुत महँगा है। बेहद मजबूरी में ही गरीब परिवार से कोई यहाँ आते हैं और हफ्ते-भर एस्कोर्ट्स अस्पताल में भर्ती रह गये तो खुदा ही मालिक। डॉक्टरों को लालच देना यहाँ मैनेजमेन्ट की नीति है – कमाई करवाओ और बोनस के रूप में साल में लाख-दो लाख-कार लो। अनावश्यक व महँगे टैस्ट लिखना , अनावश्यक भर्ती-आई.सी.यू. में रखना डॉक्टरों के लिये कमाऊ पूत के तमगे लिये हैं। यह धर्मार्थ-लोकार्थ अस्पताल है और विस्तार देख रहे हैं , खूब फलफूल रहा है। धर्मार्थ-लोकार्थ है इसलिये बीस हजार रुपये फी वर्ग गज वाली जमीन एक रुपया प्रति वर्ग गज के हिसाब से अस्पताल को मिली-ली। परोपकार का काम है इसलिये इसमें पैसे एस्कोर्ट्स के हर प्लान्ट से महीने-दर-महीने दान के रूप में ले कर लगाये गये। अनुसन्धान रूपी परोपकार , बढिया व बहुत सस्ता इलाज लिमिटेड कम्पनी के मुनाफों में समा गये हैं। धर्मार्थ को ढूँढना पड़ेगा किसी भूली-बिसरी कोठरी में और अस्पताल में कोई फ्री बेड है ही नहीं।"

## मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✱ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✱ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

✱ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं और 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें और अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

**डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,**
**आटोपिन झुग्गी,**
**एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001**

# दर्पण में चेहरा

**क्रियेटिव डाइंग एण्ड प्रिंटिंग मिल्स मजदूर :** " 14/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। मशीनें 24 घण्टे रनिंग में रहती हैं – कोई लन्च ब्रेक नहीं, कोई टी ब्रेक नहीं। एक-दूसरे का काम सम्भाल कर ही खाना-चाय-पानी-पेशाब।

" रात वाले 12 घण्टे में कभी न कभी रात 2-3 बजे झपकी आ ही जाती है। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों पर सुपरवाइजर मग से पानी डालते हैं , परमानेन्ट व कैजुअल को बोल कर उठा देते हैं और काम पर लगा देते हैं। सुबह टाइम आफिस में टाइम डलवाते हैं तब सो रहा था कह कर 4-5-6 घण्टे काट लेते हैं।

" रँग और कास्टिक का काम है पर मास्क नहीं देते , दस्ताने भी नहीं देते। चालू मशीन में रुआ आदि भी साफ करना पड़ता है – अगर नौकरी करनी है तो चालू मशीन में हाथ डालो। एक्सीडेन्ट होने पर चालू मशीन में हाथ डालने के लिये डाँटते हैं , एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते , प्रायवेट में कविता नर्सिंग होम में इलाज करवाते हैं।

" 500 मजदूरों के लिये 2 नीचे और 4 ऊपर , सिर्फ 6 लैट्रीन हैं – लाइन लगी रहती है। देर से लौटने के लिये डाँटना , कोई कोई सुपरवाइजर तो लैट्रीन में पहुँच कर लाइन में खड़े वरकरों को हड़काने लगता है। बरसात में बाहर फर्श पर टट्टी फैल जाती है।

" 500 में 100 परमानेन्ट , 100 कैजुअल और 300 ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर हैं। रिलीवर नहीं आने पर परमानेन्ट को भी 36 घण्टे लगातार काम करना पड़ता है – नहीं करो तो गेट बन्द। जब 36 घण्टे लगातार काम करवाते हैं तब भी कोई रैस्ट नहीं करने देते – कम्पनी में रैस्ट रूम है ही नहीं।

" ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को 12 घण्टे काम के बदले 60 और 80 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में रविवार को साप्ताहिक छुट्टी होती है पर ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों के इस दिन के पैसे काट लेते हैं। कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं , प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची नहीं , वार्षिक बोनस नहीं।

" इन पाँच साल में ई.एस.आई. , पी.एफ. और श्रम विभाग के अधिकारियों के दर्शन तक हमें फैक्ट्री में नहीं हुये हैं। साहब लोग ऊपर ही ऊपर पैसे ले कर चले जाते हैं।

" आजकल काम कम है इसलिये हफ्ते में दो दिन , शनिवार और रविवार को फैक्ट्री बन्द रख रहे हैं पर शिफ्टें 12-12 घण्टे की ही हैं और शनिवार के हम सब के , 500 मजदूरों के पैसे काट लेते हैं।"

**टेलीफोन विभाग वरकर :** " सरकारी विभाग है और ठेकेदारी प्रथा खूब है। विभाग के खाते में प्रति वरकर 2600 रुपये महीना ठेकेदार को दिये जाते हैं लेकिन ठेकेदार हमें 1500 रुपये महीना ही देते हैं। जनरल मैनेजर तक को यह मालूम है – हम ने कई लिखित शिकायतें भी की हैं पर कोई असर नहीं , नीचे से ऊपर तक हिस्सा-पत्ती जो है। न तो हमारी ई.एस.आई. है और न जी.पी.एफ.। हमें साप्ताहिक छुट्टी तक नहीं देते। अमीर विभाग है पर हमें समय पर तनखा नहीं – आज 19 मई हो गई है और अप्रेल का वेतन हमें अभी नहीं दिया है।"

**चायवाला :** " डबुआ सब्जी मण्डी में खोखा है पर चाय की बिक्री से गुजारा नहीं चल रहा था। एक रिश्तेदार ने फैक्ट्री में लगवाने का जिक्र किया तो पत्नी मेरे पीछे पड़ गई। मैंने चाय का काम समेटा और ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँचा तो कल आना , कल आना में हफ्ता खत्म। तँगी तो पहले ही थी , ऐसे में मैंने फिर खोखा खोला पर चाय का जो थोड़ा-बहुत धन्धा चलता था वह भी ठप्प – ग्राहक टूट गये थे , अन्य खोखों पर चाय पीने लगे थे। दो दिन बाद मैंने फिर फैक्ट्री के चक्कर काटने शुरू किये। कल से ड्युटी लग जाने की बात है पर इधर नई चिन्ता यह , हो गई है कि जहाँ लगना है ( इन्जेक्टो फैक्ट्री), वहाँ तनखा कब देंगे इसका भरोसा नहीं है।"

**क्लच आटो मजदूर :** " प्रेस शॉप में सब परमानेन्ट वरकरों के हाथ कटे हुये हैं। मशीनें चलाये कौन ? कैजुअल वरकर ! फैक्ट्री की प्रेस शॉप को टोटल कैजुअल चलाते हैं। कैजुअलों के हाथ कटते हैं तब उन्हें ई.एस.आई. अस्पताल भेज देते हैं और फिर छुट्टी , नौकरी से निकाल देते हैं। भर्ती के समय ही कैजुअलों से मैनेजमेन्ट कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवा लेती है , इस्तीफे लिखवा लेती है। इधर कम्पनी ने तनखा में भी देरी करनी शुरू कर दी है – अप्रेल का वेतन आज 15 मई तक हमें नहीं दिया है।"

**इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड वरकर :** " खूब दुखी हैं। हिसाब नहीं मिला है। कोई कहीं तो कोई कहीं है – किसी तरह गुजारा कर रहे हैं। पता करने पर यही सुनने को मिलता है कि केस चल रहा है , कम्पनी नीलामी में है।" ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

**RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।